बच्चे थे कुल 24, सार्टिफिकेट जारी किया 200 का

Written by शंभूनाथ शुक्ल
Saturday, 17 March 2018 07:34

: लड़कियां बीएड हैं, मगर घर की शोभा बढ़ा रहीं, लड़के सेना में जाना चाहते हैं मगर बैठे हैं घर में : दावा कि हर घर में है शौचालय, मगर सुबह-शाम खेत-परेड होती है : झूठे नारियल से शम्भूनाथ ने पूरी स्टोरी का सिर फोड़ डाला : एक सम्पादक को आखिर झूठ का सहारा क्यों लेना पड़ता : जमीनी या ढपोरशंखी-तीन :

शंभूनाथ शुक्ल

गाजियाबाद :रमेसुर कटियार ने पूछा है कि "सुकुल जब तुम्हें गावैं जाँय का रहय तौ यो ससुर कानपुर का इत्ता बड़ा गाँव नाहीं दिखाई पड़ो! का कमी है हमरे गाँव माँ, एक बीघा गन्ने की फसल है, इत्ते मा ही मटर है. शकरकंदी, गाजर, आलू, मूली सब कुछ तो है. तब तुम काले कोसन जौनपुर काहे गयो?" सवाल वाजिब है. मैं उस जौनपुर क्यों गया जहाँ बस एक श्रमजीवी और दूसरी फरक्का एक्सप्रेस ट्रेन जाती है. इनमें से दोनों के पहुँचने का समय इतना 'आड' कि रात भर जौनपुर सिटी के प्लेटफॉर्म पर ही समय काटना पड़े. छोटा-सा शहर और उस पर भी श्रमजीवी के पहुँचने का वक़्त रात साढ़े बारह का. लेकिन मैं गया जौनपुर! वहां गया चंचल बीएचयू से मिलने, उसका मिजाज समझने. एक ऐसा आदमी जो किसी को कुछ नहीं समझता. बेबाक और बेलौस! जिसने पूरी इमरजेंसी जेल में काटी लेकिन इंदिरा गाँधी के खिलाफ कभी एक शब्द नहीं बोला. और आज वही आदमी मौजूदा हुक्मरानों की चड्ढी ही उतारे दे रहा है. जिसकी चित्रकारी अमर है और कलम बेजोड़. जो व्यक्ति गाँधीवाद से इतना प्रभावित है कि जौनपुर शहर से 40 किमी दूर बदलापुर के पास वर्धा और साबरमती आश्रम की तर्ज़ पर समताघर खोला हुआ है.

पत्रकारिता से जुड़ी खबरों को देखने के लिए निम्न लिंक पर क्लिक कीजिए :-

1 / 4

Written by शंभूनाथ शुक्ल
Saturday, 17 March 2018 07:34

□□□□□□□□

इस फक्कड़ और बाहर से "रफ-टफ" दिखते चंचल के समताघर में कैसे पहुँचूँगा, यह एक सवाल मुँह बाये खड़ा था. रात कहाँ जाऊंगे, कुछ पता नहीं क्योंकि जौनपुर कभी आया ही नहीं. साथ के लिए अनिल माहेश्वरी को और ले लिया था, जो एक तो अंग्रेजी पत्रकार ऊपर से गाँव में कभी रहे नहीं. न उन्होंने कुछ पूछा न मैंने बताया और 13 जनवरी की दोपहर दो बजे हमने श्रमजीवी एक्सप्रेस गाजियाबाद से पकड़ी. हम चल तो दिए लेकिन अपने गंतव्य से अनजान. जब रात दस बजे ट्रेन लखनऊ पहुंची तब अनिल जी ने पूछा- जौनपुर कितने वक्त आएगा? मैंने कहा- शायद एक के आसपास. अनिल जी बोले कि आप नींद मार लो, तब तक मैं कुछ पता करता हूँगा. नींद आँखों में कहाँ थी. धुकर-पुकर मची थी कि क्या होगा, कहाँ जाएंगे. हालाँकि चलने के कुछ पहले चंचल जी ने बता दिया था कि आप रात रिक्शा पकड़ कर चंद्रा होटल चले जाइयेगा. उसके मालिक राजेश सहि को कह दिया है. करीब एक बजे गाड़ी मुसाफिरखाना ही पहुंची. डी-टू के उस कोच में न कोई अटेंडेंट न टीटी. न आरपीएफ का सिपाही गश्त करते दिखा न जीआरपी का. पूछें तो किससे!

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□:-

□□□□□□□□ □□□□□□□□

अब दोनों लोग जगने लगे और बार-बार मोबाईल पर रनिंग ट्रेन स्टेटस देखने लगे. पर एक तो नेट आ-जा, दूसरे वह आधा घंटा पहले का स्टेटस बता. रात दो बजे आया सुल्तानपुर. वहां से एक घंटे की दूरी पर नेट जौनपुर शो कर रहा था. हम बैठ गए. जहाँ भी ट्रेन खड़ी होती हम दरवाजा खोलकर देखते पर कोहरे में कुछ समझ न आता. तभी सुबह चार बजे चंचल जी का फेसबुक स्टेटस पढ़ा कि हम आज मना रहे हैं कि "ट्रेन लेट आए ताकि पंडज्जी को रात में तक्लीफ न हो". अब यह तय हो गया कि है जौनपुर इंटीरियर में ही. ठीक 5.45 पर ट्रेन एक प्लेटफॉर्म पर लगी. कोहरे में कुछ दिखा तो नहीं लेकिन दूसरे कोच से कुछ लोग उतर रहे थे. हमें लगा यह कोई आउटर का स्टेशन होगा. तभी पास आए एक आदमी से मैंने पूछा तो बोला जौनपुर. मैं भौंचक्का कर कोच में घुसा और अनिल जी से कहा जल्दी उतरिये. हम लोग अपने सामान घसीटते हुए उतरे. प्लेटफॉर्म भी ऐसा कि जिस पर ट्राली वाले हमारे बैग बार-बार अटक जाएँ. हम बाहर आए. कुछ टेम्पो, कुछ ऑटो रिक्शा खड़े थे. हमारे चंद्रा होटल बताते ही वे बोलते डेढ़ सौ. हमें लगा कि यहाँ भी दिल्ली की तरह ही ऑटो वाले ठग हैं.

□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□

□कसाइकिल रिक्शा वाले ने कहा- जो आपकी इच्छा हो दे दीजियेगा. हम उसी पर बैठे. पूरा शहर सो रहा था. होटल पहुंचे तो रिक्शे वाले को सौ का नोट दिया, उसने 50 वापस कर दि□. होटल में रिशेप्शन पर बैठे युवक ने बताया कि हम आपके कारण आधी रात से जगे बैठे हैं. रूम में ग□ और फ्रेश होकर नीचे आया तो पाया कि राजेश सिंह जी स्वयं हमारा इंत□ार कर रहे हैं. बोले- चंचल जी का आदेश था. सामने स्थित बेनीराम प्यारेलाल की दूकान से शुद्ध घी की पूरियां और आलू-टमाटर की रसीली सब्जी आई. साथ में इमरती भी. कुछ ही देर में चंचल जी की भेजी गा□ी आ गई. हम वहां से चले और डे□ घंटे में समता घर पहुँच ग□. गेहूं और सरसों के खेतों से घिरा समताघर. फिरन पहने चंचल जी ख□ थे. ते□ चाल से करीब आ□ और गले मिले. यह समताघर जिसमें कुछ कमरे पक्के थे और कुछ कच्चे. मैं जब चला था तब अपने साथ अपने जॉगिंग शू के साथ बिना फीतों वाले शू भी रखे थे. मुझे डर था कि समताघर गाँव में है क्या पता वहां टॉयलेट हो या न हो. शायद दूर खेतों में जाना प□. तब चप्पलें ठीक नहीं रहेंगी. लेकिन यहाँ तो हर कमरे से अटैच्ड बाथरूम था और टॉयलेट शीट भी वेस्टर्न स्टाइल की. □क पक्के रूम में हमारा सामान लगाया गया. बीस बाई बीस के उस कमरे में चार-चार फीट चौ□ दो त□्त लगे थे. जिसमे रुई के गद्दे और सेमल की रुई की रजाइयां थीं.

□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□:-

□□□□□□□□□□ □□□□□□□

दोपहर को जब समताघर में प□ने वाले बच्चे आने शुरू हु□, तब हमने भी क्लास ली. गाँव की हर बहू प□ी-लिखी है. कुछ कामचलाऊ तो कुछ बी□ और □म□ भी. कईयों ने बी□ड किया है तो कुछ टीईटी पास भी हैं. लेकिन जो सबसे खास बात यहाँ देखने को मिली, वह है यहाँ की ल□कियों का प□ाई के प्रति अत्यधिक रुझान. इस गैर परम्परागत स्कूल में भी प□ने के लि□ करीब दो सौ बच्चे आते हैं, इसमें से ल□के कुल 50 और ल□कियाँ डे□ सौ. सारे बच्चे कक्षा छह से दसवीं क्लास तक के हैं. पर म□ की बात यह कि जहाँ ल□कों ने अंग्रेजी और गणित से दूरी जताई वहीं ल□कियों का रुझान गणित में सबसे अधिक फिर अंग्रेजी और साइंस में दिखा. हर ल□की ने अपनी इच्छा इंजीनियरिंग में जाने की जताई जबकि ल□कों में से ज्यादातर ने पुलिस और अर्धसैनिक बलों में जाने की इच्छा जताई और तीन ल□कों ने क्रिकेटर बनने में. किसी भी ल□के में उच्च शिक्षा के प्रति आकांक्षा नहीं दिखी.

ल□कियों में प□ाई के प्रति यह दिलचस्पी देखकर मुझे रमई काका की वह कविता याद आ गई, जिसमें वे लिखते हैं- लरकऊनू बी□ पास किहिनि, बहुरेवा बैर कक्हरा ते! यानी बेटे ने तो बी□ पास किया हुआ है लेकिन बहू को अक्षरज्ञान तक नहीं है. मुझे लगा कि आज अगर रमई काका जिंदा होते तो लिखते- बहुरेवा □म□ पास किहिसि, लरकऊनू बैर कक्हरा ते! गाँव में दिन भर में करीब 18 घंटे बिजली आती है इसलि□ इस गाँव में फ्रिज, □सी, कूलर, टीवी आदि की कमी नहीं है. और इस व□ह से गाँव को इन उपकरणों की देखभाल के लि□ इलेक्ट्रिशियन चाहि□ और ये सब समताघर से मिल जाते हैं. अपने सहारे गाँव यानी स्वावलंबन की पक्की बानगी है यह गाँव! और पूरालाल ढेमा नामक इस गाँव की कायापलट की है उस शख्स ने जिसका नाम तो है चंचल लेकिन मिजा□ और चिंतन है □कदम किं□क. जो नारियल की तरह रफ-टफ है लेकिन अंदर से कोमल और कांत!

बच्चे थे कुल 24, सार्टिफिकेट जारी किया 200 का

Written by शंभूनाथ शुक्ल
Saturday, 17 March 2018 07:34

जब 17 को हम वहां से विदा हुए तो अपने जॉगिंग शू जान-बूझ कर वहीं छोड़ आया. हमारे बदलापुर पहुँचते ही चंचल जी का फोन आया कि पंडिज्जी गाड़ी वही रुकवा लीजिए, मैं किसी के बाइक से भेज रहा हूँ, आप अपने जूते यहीं भूल गए हैं. मैंने जवाब दिया- नहीं चंचल जी भूल नहीं आया बल्कि छोड़ आया हूँ ताकि जल्द ही फिर आऊँ. (क्रमश :)

आइये, अब हम आपको दिखाते हैं कि बड़े-बड़ों में जमीनी या हवाई बातों में कितना छोटा अथवा बड़ा फर्क होता है। इसकी बाकी कड़ियों को बांचने के लिए कृपया निम्न लिंक पर क्लिक कीजिएगा :-

जमीनी -ढपोरशंखी

4 / 4